● आईआईएम रायपुर के 13वें दीक्षांत में दिखे कई रोचक नजारे, रेड्डी लेबोरेटरीज के एमडी रहे मुख्य अतिथि

आईआईएम का सबसे लंबा दीक्षांत... पहली बार तीन बैच के छात्रों को एक साथ दी गई उपाधि

आईआईएम का 13वां दीक्षांत समारोह नया रायपुर स्थित कैंपस में रखा गया। यह आईआईएम रायपुर का अब तक का सबसे लंबा दीक्षांत रहा। सामान्यत: आईआईएम द्वारा प्रतिवर्ष दीक्षांत का आयोजन किया जाता है। एक ही बैच के छात्रों को उपाधि दी जाती है। कोविड काल में आईआईएम ने ऑनलाइन डिग्रियां बांटी। छात्रों की मांग पर उन्हें पुन: ऑफलाइन मोड में डिग्री बांटी गई। इस तरह से इस बार तीन बैच के छात्रों को एक साथ उपाधि दी गई। इसलिए 13वां दीक्षांत अब तक का सबसे लंबा चलने वाला दीक्षांत बन गया।

- 2024 बैच के साथ ही 2020 और 2021 के छात्रों को भी बांटी गई उपाधि
- तीन बैच को डिग्री, इसलिए पहली बार लगाया गया पंडाल

रायपुर। उपाधिधारकों की संख्या को देखते हुए प्रबंधन द्वारा हॉल में दीक्षांत का आयोजन ना कर इसके लिए विशेष रूप से पंडाल लगाया गया था। मुख्य अतिथि डॉ.रेड्डी लेबोरेटरीज के एमडी जीवी प्रसाद रहे। बोर्ड ऑफ गवर्नेंस के चेयरपर्सन पुनित डालमिया, निदेशक प्रो.रामकुमार काकानी सहित सभी प्राध्यापक मौजूद रहे। दोपहर लगभग 2.30 बजे प्रारंभ हुआ यह दीक्षांत संध्या 6.30 तक चला। एमबीए के पीजीपी अर्थात पोस्ट ग्रेज्यूएट प्रोग्राम के 2022-24 के 298 छात्रों को उपाधि दी गई। इसी कोर्स के कोविड प्रभावित 2018-20 तथा 2019-21 सत्र के एल्यूमिनी बैच को भी उपाधि दी गई। ईपीजीपी अर्थात एग्जीक्यूटिव पोस्ट ग्रेज्यूएट प्रोग्राम इन एमबीए के 184 छात्रों को भी उपाधि बांटी गई। राउत नाचा भी पेश किया गया।

सचेत रहें कि आप किसके लिए काम कर रहे हैं

मुख्य अतिथि जीवी प्रसाद ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा, आपको इस चीज के प्रति सचेत रहना चाहिए कि आप किसके लिए काम कर रहे हैं। वे किससे प्रेरित हैं, इसका भी ध्यान रखें। कई कंपनियां कर्ज लेती है और लोग देश छोड़कर भाग जाते हैं। उन्होंने चिड़ियों से धैर्य रखने की सीख देते हुए कहा कि इको सिस्टम में बैलेंस रखना हमें आना चाहिए। अपना किस्सा सुनाते हुए उन्होंने बताया कि किस तरह से कम उम्र में जिम्मेदारी दिए जाने के बाद कंपनी के कई लोग उनके खिलाफ हो गए थे और अपना इस्तीफा दे दिया था। दीक्षार्थियों को सफलता के लिए पांच सूत्र उन्होंने बताए-

- खराब परिस्थितियां नई खोज की राह बनाती है और हमारी यात्रा को आकार देती है।
- नया सीखने के लिए हमेशा उत्सुक बने रहें।
- बेहतरी का लक्ष्य रखने वाली संस्था से ही जुड़ें।
- जो दुनिया के लिए अच्छा है, वो ही आपके लिए अच्छा है।
- आप जितना काम करते हैं, उससे अधिक बनें।

● टॉपर्स मंत्र...

तनाव हो तो लें ब्रेक

मुंबई निवासी महालक्ष्मी शन्तुगत को बोर्ड ऑफ गवर्निंस चेयरपर्सन गोल्ड मेडल दिया गया। अपनी यात्रा साझा करते हुए कहा, मुझे प्लेसमेंट ऑफर हो चुका है। अब वे संबंधित कंपनी में अपनी सेवाएं देंगी। उनका कहना है कि सफलता के लिए चीजें मैनेज करनी होती है। कई बार फैमिली से दूरी सहित कई चीजें परेशान करती थी। तनाव में मैं सब चीजों से ब्रेक लेकर दोबारा शुरुआत करती हूं।

पढ़ने में रुचि थी, घरवालों को लगता था कुछ बड़ा करेगी

तनवी बागोरा को डायरेक्टर गोल्ड मेडल प्रदान किया गया। मूलतः इंदौर की रहने वाली तनवी के पिता दिनेश स्वीमिंक कोच हैं, जबकि मां पुष्पा गृहणी है। बीबीए करने के बाद एमबीए करने वाले तनवी कहती हैं कि मुझे पढ़ने में बचपन से रुचि थी। मैं पढ़ाई में अच्छी थी तो घरवालों को भी लगता था कि कुछ बड़ा करेगी। मेरा किसी भी सोशल साइट पर कोई अकाउंट नहीं है। मेरा फोकस पूरी तरह से पढ़ाई पर रहा। मेरा मानना है कि दुनिया बहुत कुछ बोलती है। आपकी संगत और काम अच्छे होने चाहिए। सफलता का श्रेय माता-पिता के साथ भाई गौरव और अपने करीबी दोस्तों को दिया।

पढ़ाई के साथ ऑनलाइन जॉब शेयर मार्केट में ट्रेडिंग भी

चेयरपर्सन मेडल हासिल करने वाले मुंबई के देवंत अग्रवाल के पिता बिजनेसमैन हैं। कोविड के दौरान बिजनेस संबंधित कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ा। आईआईएम रोहतक से बीबीए करने के बाद एमबीए करने वाले देवंत कहते हैं कि उन्हें जिद थी कि फैमिली को अच्छी जिंदगी देनी है। इसलिए शुरुआत से ही खूब मेहनत की। फैमिली को वक्त देने के अलावा पढ़ाई के साथ ऑनलाइन जॉब और शेयर मार्केट में ट्रेडिंग भी करता था। इस कारण कई बार वक्त मिल पाता था। उस समय नहीं लगता था कि मेडल हासिल कर पाऊंगा।

बीकॉम के बाद 4 साल नौकरी, फिर एमबीए

लखनऊ के रहने वाले अंकुर बंसल ने बीकॉम करने के बाद चार साल तक नौकरी की। इसके बाद एमबीए किया और मेडल अपने नाम किया। वे कहते हैं कि नौकरी करना मेरे लिए फायदेमंद रहा। इससे मुझे कई चीजें सीखने मिली। वे प्रबंधन क्षेत्र में ही अपना कॅरियर बनाना चाहते हैं।

54 की उम्र में सिंगापुर से आए उपाधि लेने, अब यूरोप से पीएचडी

एग्जीक्यूटिव पोस्ट ग्रेज्यूएट प्रोग्राम इन एमबीए में गोल्ड मेडल हासिल करते वाले नागेश मधवाल ने 54 वर्ष की उम्र में यह उपाधि हासिल की है। वे डेल कंपनी में सेवाएं दे रहे हैं। उपाधि लेने के लिए सिंगापुर से पहुंचे। अब यूरोप की एक संस्था से पीएचडी कर रहे हैं। वे कहते हैं कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती है। उनका एक बेटा नौकरी कर रहा है, जबकि एक बेटा कॉलेज के अंतिम वर्ष में है। पढ़ाई और काम में संतुलन को लेकर उनका कहना है कि इसके लिए आपको कुछ त्याग करने पड़ते हैं। सोशल लाइफ का हिस्सा कम करके पढ़ाई दिया। पत्नी दीपिका का भी इसमें सहयोग मिला।

भारतीय मामलों की स्टडी करेगा आईआईएम

बोर्ड ऑफ गवर्नेंस के चेयरमैन पुनित डालमिया ने बताया, अभी तक प्रबंधन समझाने के लिए हावर्ड सहित अन्य बिजनेस स्कूलों में पढ़ाए जाने वाले केस स्टडी की मदद ली जाती है। लेकिन अब हम कोशिश कर रहे हैं इंडियन केस स्टडी सिलेबस का हिस्सा बने। यह ऐसा हो जिससे हावर्ड यूनिवर्सिटी वाले भी अडॉप्ट करें। निदेशक प्रो.काकानी ने आईआईएम की उपलब्धियां गिनाते हुए छात्रों को बेहतर करने की सीख दी। सभी बैच में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को गोल्ड दिए गए।

शांतनु खरे के ढाई वर्षीय जुड़वा बच्चे अपने पिता को डिग्री लेते हुए देखने के लिए पहुंचे रहे। उनकी पत्नी स्तुति ने बताया, नियमों के कारण बच्चों को अंदर ले जाने की अनुमति नहीं दी गई, लेकिन बच्चे इसके लिए शुरू से ही उत्साहित रहे।

Haribhoomi, 11th April 2024, P.01,(Haribhoomi Live)_page-0001